:: भूमिका ::

आधुनिक हिन्दी साहित्य में कविता सबसे अधिक लोकप्रिय साहित्य-विधा रही है । हिन्दी कविता को लोकप्रियता के चरमोत्कर्ष पर पहुँचाने के लिए कवि दिनकर, निराला, गुप्त जैसे सशक्त कवियोंने अपना योग दिया है । समय-समय पर अन्य कवियों ने अपने योगदान से हिन्दी कविता को ऋणी बनाया है । ऐसे कवियों में से "दुष्यंतकुमार" भी एक है । दुष्यंत-कुमारने सन् १९४९ के आसपास कविता लिखना आरंभ किया । कविता के अलावा वे नाटककार, उपन्यासकार और गज़लकार के रूपों में भी परिचित हैं । दुष्यंतकुमार का व्यक्तित्व बहुमुखी रहा है ।

साहित्य आंदोलनों के बाहर रहकर जिन कवियों ने हिन्दी कविता के विकास में योग दिया, उसमें "दुष्यंतकुमार" प्रमुख हैं । उनकी कविताओं के विषय वैविध्यपूर्ण रहे हैं । "दुष्यंतकुमार" की कविताओं पर मेरी दृष्टि-से अब तक कोई महत्वपूर्ण शोधकार्य नहीं हुआ है । एक-दो अपवादात्मक समीक्षात्मक लेखों, ग्रंथों को छोड़कर कोई महत्वपूर्ण समीक्षा नहीं हुई है । "दुष्यंतकुमार के काव्य का अध्ययन" शीर्षक प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध इस कमी की पूर्ति में किया गया एक विनम्र प्रयास है । एक दृष्टि से मेरा यह लघु शोध-प्रबंध एक उपेक्षित एवं सर्वथा अस्पर्श कवि की कला का मूल्यांकन करने-की प्रामाणिक कोशिश है ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय में दुष्यंतकुमार की जीवनी, उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू तथा उनके कृतित्व के संबंध में परिचय दिया गया है । व्यक्तित्व के अंतर्गत दुष्यंतकुमार के माता-पिता, पारिवारिक स्थिति, जन्म, शिक्षा-दीक्षा, जीविका, विवाह, जीवन, मृत्यु आदि तथा कृतित्व

के अंतर्गत सृजनारंभ, कविता, नाटक,काव्य नाटक, एकांकी नाटक, उपन्यास, आदि बातों को स्पष्ट किया गया हैं ।

द्वितीय अध्याय में दुष्यंतकुमार के काव्य का विकास प्रस्तुत किया गया है । इसके अंतर्गत उनकी प्रारंभिक रचना, प्रथम संकलन, और बाद में उनकी प्रकाशित रचना, सूर्य का स्वागत, आवाजों के घेरे, जलते हुए वन का वसंत और साये में धूप (गजल संग्रह) आदि का विकासात्मक आलेख प्रस्तुत किया गया है ।

तृतीय अध्याय में "दुष्यंतकुमार के काव्य का क्लात्मक अध्ययन" के अंतर्गत उनके काव्यांगोमें से प्रतीक विधान, छंद विधान और काव्य की भाषा आदि स्त्रोंतों को स्पष्ट किया गया है ।

चतुर्थ अध्याय में हिन्दी कविता के क्षेत्र के नयी कविता के आंदोलन और उसमें शामिल दुष्यंतकुमार के समकालीन कवियों का परिचय दिया है । नयी कविता के आंदोलन में दुष्यंतकुमार ने अपना योगदान किसतरह प्रस्तुत किया है, इसका विवेचन भी इस अध्याय में किया गया है ।

पाँचवे अध्याय में "आधुनिक काव्य के विकास" में दुष्यंतकुमार का योग-दान" की चर्चा की गयी है । इसमें दुष्यंतकुमार ने अपने काव्य के आधारपर किस तरह आधुनिक हिन्दी कविता को ऋणी बनाया उसकी चर्चा है । यह एक तरह से दुष्यंतकुमार के काव्य क्ला संबंधी योगदान का लेखा जोखा है ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का निखरा और स्पष्ट रूप डॉ. सुनीलकुमार

लवटे जी के निर्देशन का प्रमाण है । इस निर्देशन के लिए मैं उनका ऋणी हूँ ।

बॅ. खर्डेकर ग्रंथालय, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर और महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर जैसी संस्थाओं ने सामग्री संकलन और संदर्भ जुटान के संबंध में काफी सहायता की, उनका मैं आभारी हूँ । जिनकी प्रेरणा और सहायता से प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध पूर्ण हुआ वे हैं मेरे परम पुज्य माता-पिताजी और भाई । इनके ऋण में रहना ही मैं पसंद करूँगा।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का टंकलेखन विष्णु खाडे (कोल्हापूर) ने किया मैं उनका आभारी हूँ ।

(अनिल तुकाराम मगदूम)

कोल्हापूर.
दि. 9 जून, १९९५

.....